प्राक्कथन

साहित्य मनुष्य के अंतर्मन की रचनात्मक अभिव्यक्ति है तथा साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक होते हैं। साहित्यकार युगीन स्थितियों और समस्याओं का सूक्ष्म निरीक्षण करता है और अपनी रचनाओं में कई कथा-प्रसंगों और पात्रों के माध्यम से उन स्थितियों अथवा समस्याओं के बारे में अपने विचारों को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से व्यक्त करता है। उनके विचार, प्रतिबद्धता, संकल्प, संवेदना, ईमानदारी, तटस्थता, मूल्य-निरीक्षण की क्षमता, मानव-जाति के उज्ज्वल भविष्य की चिन्ता और तथ्यों का समर्थ निरीक्षण कर उन्हें यथार्थवत अंकित करने की शक्ति पर उसकी रचना की सोद्देश्यता और मूल्यवत्ता निर्भर रहती हैं।

आधुनिक युग में सामाजिक जीवन के यथार्थ पक्षों को दर्शाने वाली कई रचनाएँ हिन्दी में प्रकाशित हुई हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य की लोकप्रिय विधा के रूप में उपन्यास का विकास हुआ है। उपन्यास विश्व-साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय एवं बहुचर्चित विधा है। मानव-समाज के यथार्थ पक्षों का स्पर्श कर समकालीन हिन्दी उपन्यास उच्च जीवनदर्शों को सफलतापूर्वक व्यक्त कर रहा है। हिन्दी उपन्यास के प्रगति एवं विकास केलिए लेखिकाओं का योगदान अमूल्य एवं चिरस्मरणीय है। आधुनिक युग में जिन लेखिकाओं ने हिन्दी उपन्यास साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई है, जिनमें कश्मीर में जन्मी अहिन्दी भाषी हिन्दी साहित्य साधिका श्रीमती चन्द्रकान्ता का अनोखा स्थान है। चन्द्रकान्ता कश्मीर में जन्मी, पली, बढ़ी, अतएव उनके उपन्यासों में कश्मीरी समाज में नागरिकों के जीवन में संघर्ष-चेतना और उनकी समस्याओं को अभिव्यक्ति मिली है।

चन्द्रकान्ता के सात उपन्यास प्रकाशित हुए- **'अर्थान्तर', 'अंतिम साक्ष्य', 'बाकी सब खैरियत है', 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'यहाँ वितस्ता बहती है', 'अपने-अपने कोणार्क', 'कथा सतीसर'**। उनके उपन्यास साहित्य अपने समय और समाज का प्रामाणिक दस्तावेज़ है।

उन्होंने उपन्यासों के माध्यम से समकालीन युग-जीवन के प्रश्नों, मूल्यों, संघर्षों, सम्बन्धों आदि की व्याख्या के नेपथ्य में सामान्य लोगों की समस्याओं को स्वर देने का अनूठा प्रयास किया है। लेखिका ने इन उपन्यासों में अपने प्रतिनिधि पात्रों के माध्यम से मानवीय अधिकार और अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को उठाया है। युगीन समस्याओं के प्रति उनकी दृष्टि नितान्त मौलिक सिद्ध हुई है। वैचारिक प्रतिबद्धता, सामाजिक दायित्व, संवेदनशीलता और बेहद ईमानदारी के कारण अपने उपन्यासों में युगीन स्थितियों का तटस्थ विश्लेषण करने और समस्याओं को यथार्थ के धरातल पर अभिव्यक्ति देने में चन्द्रकान्ता को सफलता मिली है। स्त्री स्वत्व की अभिव्यक्ति की दृष्टि से इनकी उपन्यासों की विशिष्टता को प्रामाणिक ढंग से निरूपित करने के उद्देश्य को लेकर मैं ने **'चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप'** को अपने शोध-विषय के रूप में स्वीकार किया है।

अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय का शीर्षक है **'समकालीन हिन्दी उपन्यास और स्त्री विमर्श: नयी दिशाएँ एवं उपलब्धियाँ'** में समकालीनता का परिभाषा, अर्थ एवं स्वरूप, समकालीन महिला लेखन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ जैसे, भूमण्डलीकरण-पर्यावरण सजगता एवं आर्थिक उदारीकरण, उपभोक्तावाद का प्रसार, तकनीकी क्रान्ति, मीडिया का प्रभाव, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श पर गहन अध्ययन किया गया है। महिला उपन्यास लेखन की पृष्ठभूमि का सामान्य परिचय देने के साथ प्रथम महिला उपन्यासकार, समकालीन महिला उपन्यासकारों की सृजन की अस्मिताओं पर प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा प्रस्तुत अध्याय में चन्द्रकान्ता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए उनकी जीवनवृत्त, जन्म तथा परिवार, रचना संसार, पुरस्कार एवं सम्मान आदि पर विचार किया गया है। परम्परागत स्त्री की आदर्शवादी लकीर से हटकर जीने वाली चन्द्रकान्ता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व परस्पर सम्बन्धित रहते हैं। उनके कर्तव्यशील व्यक्तित्व और व्यक्तित्व से जुड़े कृतित्व का अध्ययन इस अध्याय

की विशेषता है। इसी अध्याय में आपके उपन्यासों, कहानियों, आत्मकथात्मक संस्मरणों का भी परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय **'स्त्री स्वत्व के नए अर्थ एवं सन्दर्भ'** में स्वत्व: स्वरूप एवं अवधारणा, स्त्री स्वत्व: परिभाषा, स्त्री व्युत्पत्तिगत अर्थ पर विचार किया गया है। विभिन्न भारतीय सन्दर्भ में स्त्री स्वत्व के स्वरूप; वैदिक काल, महाकाव्य काल, जैन और बौद्ध काल, मध्ययुगीन काल, आधुनिक काल आदि उपशीर्षकों के अन्तर्गत स्त्री स्वत्व के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। स्त्री स्वत्व के नए सन्दर्भ एवं पाश्चात्य दृष्टि, स्त्री स्वत्व के नए अर्थ सन्दर्भ एवं पुरुष प्रधान समाज, स्त्री स्वत्व की अवधारणा एवं साहित्यिक दृष्टि, हिन्दी उपन्यासों में स्त्री चेतना का विकास आदि विषयों का अवलोकन किया गया है।

तृतीय अध्याय **'चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप'** है। प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत सात उपन्यासों का अध्ययन, स्त्री स्वत्व के विविध रूप जैसे प्राचीन विचारधारा से प्रभावित स्त्री, आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत स्त्री, पारिवारिक स्नेह सौहार्द स्त्री, असफल दाम्पत्य जीवन बितानेवाली स्त्री, विवाह पूर्व एवं विवाहेतर प्रेम और यौन सम्बन्धों में फँसी स्त्री, किशोरावस्था में किए प्रेम में फँसी स्त्री, अनमेल विवाह से त्रस्त स्त्री, शोषण के शिकार बनी स्त्री, अकेलापन से तनावग्रस्त एवं संघर्षभरित उदासीन स्त्री, वृद्धावस्था में स्त्री, पके उम्र में अनब्याही स्त्री, आतंकवाद से त्रस्त स्त्री का चित्रण किया गया है। स्वभाव विशेष के आधार पर स्त्री स्वत्व के विविध रूप का साहसी, सेवाभावी, स्त्री के खिलाफ स्त्री, प्रेमी के इन्तज़ार में स्त्री, विचार और भावना के द्वन्द्व में फँसी स्त्री, दहेज प्रथा से विरोधी स्त्री आदि उपशीर्षकों के अध्ययन किया गया है।

'चन्द्रकान्ता के स्त्री पात्र, अस्मिता की तलाश, प्रतिरोध और समस्याएँ' शीर्षक चतुर्थ अध्याय में उनके उपन्यासों में चित्रित प्रमुख स्त्री पात्रों की चर्चा की गई है जैसे, स्त्री अस्मिता की तलाश का विश्लेषणात्मक अध्ययन, अस्मिता अर्थ एवं स्वरूप, स्त्री

अस्मिता का स्वरूप, स्त्री अस्मिता की तलाश, उपन्यासों में चित्रित स्त्री स्वत्व की समस्याओं के विवध रूप जैसे पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और आतंकवाद से जुड़ी समस्याएँ और धार्मिक व साँस्कृतिक समस्याओं पर विचार विमर्श किया है।

पंचम अध्याय **'चन्द्रकान्ता के उपन्यासों की भाषिक संरचना'** में, उपन्यासों में शिल्प विधान, शिल्प: अर्थ, शिल्प: परिभाषा, शिल्प: स्वरूप, शिल्पागत वैशिष्ट्य- कथानक, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देशकाल वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य, शीर्षक की सार्थकता, भाषागत वैशिष्ट्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रत्येक अध्याय के अन्त में तद्विषयक अध्ययन का निष्कर्ष देकर शोध प्रबन्ध को अधिक स्पष्ट रूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है। अध्यायों के बाद 'उपसंहार' शीर्षक के अन्तर्गत अध्ययन-विश्लेषण के सार संक्षेप के साथ-साथ अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। उसके बाद 'सन्दर्भ ग्रन्थ सूची' में अध्ययन केलिए प्रयुक्त आधार ग्रन्थों एवं सहायक ग्रन्थों का परिचय दिया गया है। अध्ययन केलिए उपयोगी पत्रिकाओं और वेबसाइट् की सूची भी तदनन्तर समाहित की गयी है। अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत अपने प्रकाशित शोध आलेख, लेखिका के साथ साक्षात्कार में प्रयुक्त प्रश्नोत्तरी, लेखिका द्वारा लिखित आशीर्वचन पत्र और 'प्लाजारिसम रिपोर्ट' प्रस्तुत है।